कयामत की निशानियाँ (मुस्लिम शरीफ)

मौलाना मुहम्मद इमरान कासमी बिज्ञानवी.

हिन्दी किताब एक हजार मुन्तखब हदीसे मुस्लिम शरीफ से रिवायत का खुलासा है.

नोटः- 'हदीष की रिवायत का खुलासा है'.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

1) रावी हज़रत अबू हुरैरह रदी; रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- कयामत उस वकत तक कायम नहीं होंगी जब तक बहुत ज़्यादा "हरज" ना हो. सहाबा किराम रदी. ने अर्ज़ किया- ऐ अल्लाह के रसूल! हरज क्या है? आपﷺ ने फरमाया "कत्ल, कत्ल". वज़ाहत- कयामत के नज़दीक कतल और गारत आम हो जाएगी, कातिल को मालूम नहीं होगा की वो क्यू कतल कर रहा है और मकतूल को मालूम नहीं होगा की उसे किस जुर्म में कतल किया गया.

2) रावी हज़रत सअद बिन अबी वकास रदी; रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- मेने अपने रब से तीन चिझो का सवाल किया था, अल्लाह तआला ने मुझे दो चीजे अता फरमा दी और एक चीझ

के बारे में सवाल करने से मुझे रोक दिया. मेने अपने रब से ये सवाल किया की वो मेरी उम्मत को सूखा पडने से हलाक ना करे. अल्लाह तआला ने मुझे ये चीझ अता कर दी. फिर मेने अल्लाह तआला से ये सवाल किया की वो मेरी उम्मत को गर्क करके हलाक ना करे तो अल्लाह तआला ने ये चीझ मुझे अता कर दी. उसके बाद मेने अल्लाह तआला से सवाल किया की उम्मते मुहम्मदिया की एक दूसरे से लडाई ना हो तो अल्लाह तआला ने मुझे इस सवाल से रोक दिया.

वज़ाहत- यही वजह है की लोग एक दूसरे को नाहक कत्ल कर रहे है और कत्ल वो बडा गुनाह है जिसकी वजह से जहन्नम वाजिब हो जाती है. अधिक तफसील के लिये पढिये तर्जुमा और तफसीर सूरे निसा ४, आयत ९३.

3) रावी हज़रत अबू हुरैरह रदी; रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ने फरमाया- उस वकत तक कयामत नहीं आएगी जब तक की दरिया ए फुरात से सोने का एक पहाड ना निकल आये जिस पर जंग होंगी और हर सौ आदमियो में से निन्नानवे (९९) आदमी मारे जाएंगे और उनमे से हर शख्स ये सोचेंगा की शायद में ही वो शख्स हू जिसको निजात मिल जाएंगी.

4) रावी हज़रत हुजैफा बिन उसैद रदी; रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ने फरमाया- जब तक दस निशानियां जाहिर ना हो कयामत नहीं आएगी. १) पूरब में ज़मीन का धंसना. २) पश्चिम में ज़मीन का धंसना. ३) अरब खाडी में ज़मीन का धंसना. ४) धुएं का ज़ाहिर होना. ५) दज्जाल का ज़ाहिर होना. ६) 'दाब्बतुल-अर्ज़' (एक चौपाया जानवर जो कयामत के नज़दीक ज़मीन से निकलेंगा और लोगो से गुफ्तगू करेंगा). ७) याजूज माजूज का निकलना. ८) पश्चिम से सूरज का निकलना. ९) एक आग जो अदन (एक जगह का नाम है) के किनारे से निकलेगी और लोगो को हाककर हशर के मैदान की तरफ ले जाएंगी. १०) हज़रत ईसा अलै. का नाज़िल होना (आसमान से उतरना).

5) रावी हज़रत अबू हुरैरह रदी; रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ने फरमाया- उस वकत तक कयामत कायम नहीं होंगी जब तक हिजाज़ (मक्का और मदीना) की ज़मीन से ऐसी आग जाहिर ना हो जाए जिससे बसरा के ऊंटो की गर्दने रोशन हो जाएंगी.

वज़ाहत- कयामत के करीब निकलने वाली ये आग इतनी बुलन्द होंगी की दूसरे मुल्को तक उसकी रोशनी जाएंगी.

6) रावी हज़रत अबू हुरैरह रदी; रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- उस ज़ात की कसम जिसके हाथ में मेरी जान है, लोगो पर एक ज़माना आयेगा की कातिल को ये मालूम नहीं होगा की वो क्यू कतल कर रहा है और मकतूल को ये मालूम नहीं होगा की उस्को क्यू कतल किया गया है.

7) रावी हज़रत अबू हुरैरह रदी; रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- उस वकत तक कयामत कायम नहीं होंगी जब तक मुसलमान तुर्की के रहने वालो से जंग ना करे, ये वो लोग है जिनके चेहरे टूटी हुई ढाल की तरह होंगे. ये लोग बालो का लिबास और बालो की जूतियां पहनेंगे.

8) रावी हज़रत अबू हुरैरह रदी; रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- किसरा मर गया उसके बाद कोई किसरा नहीं होंगा, और जब कैसर मर जाएंगा तो उसके बाद कोई कैसर नहीं होंगा, और उस ज़ात की कसम जिसके हाथ में मेरी जान है तुम उनके खज़ानो को अल्लाह तअला की राह में खर्च करोंगे.

वज़ाहत- रसूलुल्लाहﷺ के ज़माने में ईरान के बादशाह को किसरा और रूम के बादशाह को कैसर कहा जाता था. ये दोनो सबसे ज़्यादा

ताकतवर हुकूमतें थीं. आपकी भविष्यवाणी के मुताबिक हज़रत उमर फारूक रदी. के दौर में किसरा का नाम ही मिट गया और कैसर शिकस्त खाने के बाद फरार हो गया. उनके खज़ानो को मुसलमानो ने अल्लाह तआला की राह में तकसीम कर दिया.

9) रावी हज़रत अबू हुरैरह रदी; रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया- उस वकत तक कयामत कायम नहीं होंगी जब तक दज्जाल और कज़्ज़ाब इन्तिहाई झूठो का ज़हूर ना हो जाए जो तीस के करीब होंगे, उनमे से हर एक का ये ख्याल होंगा की वो अल्लाह का रसूल है.